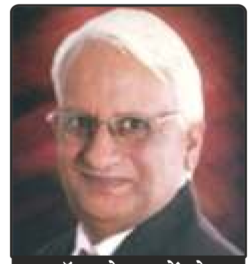
पवारी बोली भाषा : इतिहास, वर्तमान तथा भविष्य


डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे

ऐतिहासिक तथ्य

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार अग्निकूलीन क्षत्रिय परमार (पंवार/पवार) वंश ने मालव प्रदेश पर ईसापूर्व 224-215 से ईस्वी 1306 तक अखंडित राज्य किया और उन्होंने भारत का सुवर्ण इतिहास रचा! इस राजवंश में महर्षि भर्तृहरि, सम्राट विक्रमादित्य, चक्रवर्ती राजा भोज, महावीर जगदेव जैसे युगपुरुष हुए (दशरथ शर्मा : पंवार वंश दर्पण, 1960) । पवार लोक मालवा से औरंगजेब के अंतिम काल (ईस्वी 1680-1700) में हिन्दू-मुस्लिम धर्मपरिवर्तन से बचने के लिए बैनगंगा-वर्धा घाटी क्षेत्र (विदर्भ-महाराष्ट्र तथा महाकौशल-मध्यप्रदेश) में आए एवम् गोंड तथा मराठा राजाओं की सेना में भर्ती हो गए, यह रेव्ह. एम. ए. शेरिंग (1879) ने अपनी जगविख्यात किताब 'हिंदू ट्राईब्स एंड कास्ट्स, भाग 2 तथा एंथ्रोपोलॉजी कमेटी रिपोर्ट ऑफ सी.पी.- सर अल्फ्रेड (1868) में विवरण किया है । कालांतर में वे इस क्षेत्र में प्रगतिशील सम्पन्न कृषक बन गये । उन्होने मालवा से अपने साथ अपनी मातृभाषा पवारी (पोवारी/भोयरी) बोली भी इस प्रदेश में लाई । भारत सरकार गृहमंत्रालय की जनगणना संलग्न भारतीय भाषा अहवाल वर्ष 1971, 1981, 1999, 2001 और 2011 में हमारी बोली का 'पवारी/पोवारी' नाम से उल्लेख किया गया है । बालाघाट जिला गजेटियर में भी पृष्ठ 72 पर 'पवारी' कही गयी हैं। भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रकाशित भारतीय भाषा विश्वकोश में ष्भारत की लघु एवं जनजातीय भाषाएं 2 (बी) आर्टिकल 391 अंतर्गत पवारी (पोवारी)-बुंदेली की उपभाषा का स्पष्ट उल्लेख हैं। विमलेश कांति वर्मा (1994) ने अपनी किताब 'हिन्दी की उपभाषाएं' में हमारी बोली 'पवारी/पोवारी' नाम से हिन्दी की एक उपभाषा के नाते उल्लेख किया है । बाद में गणेश देवी (2023, भारतीय लोकभाषा सर्वेक्षण), अनिक गंगोपाध्याय, 2020-ग्लिम्पसेस ऑफ इंडियन लैंग्वेजेस) आदि भाषाविदों ने भी हमारी बोली को 'पवारी/पोवारी' नाम से भाषाई जानकारी दी हैं । मराठी प्रदेश में शताब्दियों से रहने के कारण उसने भारी तादाद में मराठी शब्दों को आत्मसात किया हैं । पवारी/पोवारी बोली का 'अंतरर्राष्ट्रीय भाषा कोड'- pwr-ISO-639-3 तथा वर्तमान (ethnologic status) स्थिति- EGIDS 6&B& (endangered/असुरक्षित) दर्शाई गयी हैं ।

पवारी बोली : भाषा चरित्र

हमारी बोली का भाषा-चरित्र साधा भोला है। हमारी बोली गुड़-शक्कर जैसी मिठी है । माँ, पिता, भाई, बहन की ममता भरी है । उसमें माँ सरस्वती का निवास है । सरल शब्दों में पवारी बोली का भाषा-चरित्र निम्न प्रकार से परिचित कराया जा सकता है -

पवारी उच्चारण में 'ए' का 'ये' 'ऐ' 'अई', 'ओ' का 'वो', 'औ' का 'अव', 'अं' का 'अम' तथा 'अः' का 'अहा' अक्सर होता हैं। उसी तरह 'ण' का 'न', 'ळ' का 'र', या 'ड़', 'श' का स्य, 'ष' का 'स', 'क्ष' का 'अक्सऽ', 'ज्ञ' का 'अध्न' (मराठी भाषी) और 'ग्य' (हिन्दी भाषी), 'ऋ' का 'रु' और 'श्र' का स जैसा हैं। पवारी बोली में पुरुष तथा स्त्री लिंग ही है तथा नपुंसक लिंग नही हैं। पवारी क्रिया में आवो (आइए), जावो (जाइए), उठो (उठिए), बसो (बैठिए), खावो (खाइए), पिवो (पिजिए), बोलो (बोलिए), गावो (गाइए), लिखो (लिखिए) तो बस्या (बैठे), उठ्या (उठे), चल्या (चलें) जैसे बुंदेली क्रियापद हैं। पवारी में कुल 33 सर्वनाम हैं और मी, आम्ही, तु, तुम्ही जैसे सर्वनाम मराठी सर्वनामों से साम्य दर्शाते हैं। तृतीय पुरुष वाचक 'उ/वु' और स्त्री वाचक 'वा' तथा दोनो लिंगों के लिए 'वय' हैं। विशेषणों में पुल्लिंग ओकारांत (कारो, गोरो, थोड़ो, साजरो) तथा स्त्रीलिंगी इकारांत (कारी, गोरी, थोड़ी, साजरी) हो जाते हैं। 'है' के लिए 'से', 'आय' और इसी का बहुवचन 'सेत', 'सेती', 'आती' राजस्थानी लगते है। उपसर्ग तथा प्रत्येय बुंदेली, राजस्थानी से लगते हैं। पवारी में महाप्राण की जगह अल्पप्राण का उपयोग होता हैं, जैसे- 'दुःख' को 'दुख', 'स्वतः' को 'सताहा', 'भूख' को 'भुक', 'हाथ' को 'हात' और दूध को 'दुद' आदि (ज्ञानेश्वर टेंभरे, पवारी ज्ञानदीप)।

निम्नांकित गीत में पवारी बोली का चरित्र चित्रण किया गया है-

पवारी बोली मा साख्खर घुली से
माय की माय अजी की छाया से
भाई- बहिन को पिरेम मिसरी से
वागदेवी सरसती शारदा बोलऽ से।

पवारी त साधी-सिधी बोली से
पवारी मा एकच नथनी श्नश से
गोशाला श्शश को श्स्यश बन जासे
पोटफोड्या श्षश, श्सश होय जासे।

श्ळश नही पवारी बोलीला मालुम से
बाळको बार, चाळको चार बनं से
तळा को तरा, गळु को गरु बोलसे
दिवाळी-होळी, दिवारी-होरी बनसे।

श्वश को श्बश बनकर बन-बन नाचऽ से
विहिर को बिहिर, वेसन को बेसन
वखर को बखर, वासरु को बासरु
वाघ को बाघ बनकर ऊ डखरऽ से।

श्री को सिरि, कृष्ण किसन होसे
प्रकार को परकार,ज्योत को जोत
विठ्ठल को इठ्ठल, रुक्मा रुकमा से
स्कुल को इसकुल जी होय जासे।

अनमोल पवारी लोकसाहित्य

1) पवारी लोक साहित्य में ष्गाव - संस्कृतिष झलकती है -

कोष्टी घर को सूत बाई, कुंभार घर की कोरी मथनी
बारई घर का पान बाई, सोनार घर की सरी।
कामथ मा का धान बाई, बाप की लाडली ओ बहनाई।।
चलवो चलवो फुफा बाई, काकन बेरा भयी।।

2) पवारी लोक साहित्य में ष्मनोरंजनष भी भरपुर है -

तेलसाई ओ तेलसाई, तेल मा पड़ी काई
हुकुमचंद की डंगो बाई, तेल चढावन गई।
तेली घर को तेल बाई, कोष्टी घर को सूत
कामत का धान बाई,दुकान पर को जिरो मिठ।

3) वैसे ही विवाह मे वर-वधू के गले में गोत (सुम की माला) डाली जाती थी, जिसे अंत में दुल्हन का भाई गाय दान देकर छुडाता था।इस अवसर का ष्अलंकारिकष वर्णन इस गीत में हैं -

दादाजी को आंगन मा चंदन की डेर
चंदन की डेर ला बंधिसे रेशम की डोर,
रेशम की दोर ला लगिसे सोनो की खुर,
खुर ला बंधी से कपिला की दोर
रामू-सीता को गरो मा सोनो की मार।

4) कुछ लोकगीतों में ष्मायकाष की याद मन को द्रवित कर देती है -

दरन मी दरसु गा बाई दरसु, दरुसु पाच दाना, मोरो माहेर को कारखाना।

दरन मी दरसु गा बाई दरसु सर दाना
जानु पयले माता पिता मंग जानु रामू सीता।।

5. विरह गीत - राखी के दिन पानी बरसता है और भाई बहिन को मिलनो असंभव होता हैं तब बहन की व्यथा निम्नप्रकार से व्यक्त होती हैं -

पानी बरसनो ओ ठहरऽ नही,
नदी नाला को वो पुर वसरऽ नहीं।

भाऊ मी गावं आऊ कसी-कसी , सडक से पुरो पानी मा गा डुबी।।
बस इस्टांड ठेसन जाऊ कसी, बारिश की लगी से गा लंबी झडी।
हायरे देवा मी का करु, का करु, भाई ला राखी बांधु रे कसी-कसी।

6) 'एक दो के पाढ़े' सिखाने वाला मंगलागौर पवारी लोकगीत भी अमर हो गया -

फू बाई फू फूगडी फू
एक दुय तीन चार पाच सय सात
खेलता खेलता दम भर्यो सोड मोरो हात।
फू बाई फू, फुगडी फू।

7) परहा (धान रोपनी) गीत भी मजेदार हैं -

झर झर पानी पडसे गा बाई पडसे
मोहन पटील को परहा गडसे-गडसे।
भरभर हवा चलसे गा बाई चलसे'
मोहन पटील को परहा गडसे-गडसे।
जसोदा दिवस बुडसे गा बाई बुडसे
मोहन पटील धाय धाय रोवसे गा बाई रोवसे।

8) कुछ गीत बड़े मार्मिक है -

औंदा काही पानी पड्यो नही, वार गयो उभो धान
भारी सुखा अकाल पड गयो, मर गयो गरीब किसान!

वर्तमान दयनीय अवस्था

जैसे-जैसे शिक्षा का हमारे समाज में प्रमाण बढ़ने लगा, वैसे-वैसे पवारी बोली हमसे दूर-दूर भागने लगी और वर्तमान स्थिति इतनी खराब है कि वह सिर्फ 10-20% ग्रामीण लोकों की मातृभाषा बन कर रह गयी हैं । ऐसा लगता है कि कहीं हमारी बोली पूरी तरह लुप्त नहीं होगी, दो -चार दशकों में! इसलिए पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल की मायबोली प्रेमीजनों ने 4-11-2018 को स्थापना की । सृजन संवर्धन का कार्य निरंतर चल रहा है । गद्य-पद्य साहित्य की 30-32 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं । काव्य, निबंध साप्ताहिक स्पर्धाएं चल रही हैं । यह अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन चौथा है । उसी तरह नूतन वार्षिक पवारी स्मारिका 'पवारी साहित्य सरिता' अंक पांचवाँ हैं । जनजागृती का कार्य चल रहा है । मायबोली बचेगी तो हमारी पैतृक वारसा बचेगा, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक धरोहर बचेगी, हमारी 'पवार' पहचान बनी रहेगी । अपनी बोली का सृजन संवर्धन करते समय सिर्फ पवारी तक ही अपने को बंदिस्त नही बनाना चाहिए । सिर्फ भूतकालीन जुनी-पुरानी संस्कृति से जुड़ी पवारी बोली, का जतन किया तो मात्र पैतृक संपत्ति संभालने जैसा होगा । तालाब का संचित पानी का संरक्षण! जिवाश्मों का जतन! आधुनिक युग परिवर्तन अनुसार बोली का आधुनिकीकरण करना जरुरी है । प्राचीन शब्द बोली भाषा त्यागती हैं और आधुनिक नये शब्द ग्रहण करती हैं, जैसे हम पुराने कपड़े त्यागते हैं और नये जमाने के, नई फैशन के लिबास अपनाते हैं । पवारी बोली के संग-संग दूसरी बोली तथा भाषाएँ चली तो शब्दों के आपसी लेनदेन से अपनी बोली का सर्वांगीण विकास अटल है। समृद्धि एक-दूसरी भाषा के सान्निध्य में बढती हैं । बोली का भाषाओं की ओर बहना प्रकृति का नियम है । अंत में, संदेश यही देना चाहूँगा कि आप जागतिक विकास युग में अपनी प्रतिभा प्रकाश पुंज करने तथा विकास की सीढ़ी चढ़ने के लिए देशी-विदेशी भाषाएँ सीखो, बोलो, लिखो, पढ़ो किन्तु अपनी मायबोली पवारी को ना भूलो-बिसरो। मातृभाषा (बोली) भी मुखमंडल में चलती फिरती रखो । कागज पर उतारो । डिजीटाइजेशन करो । अपनी मायबोली को जिती-जागती, बोलती-चलती रखो । उसे इतना विकसित करो कि वह शालेय तथा विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रमों की लोकभाषा के रुप में बनी रहें ।

-डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे
4 विजयनगर दक्षिण अंबाझरी मार्ग
नागपुर -440022